अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर–पूर्वार्द्ध (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) 'चाउरंगिज्ज' का अर्थ है-
(क) चार (ख) चतुरंगीय
(ग) चउरंग (घ) चार रंग वाला (ख)

(b) 'कम्माणं पहाणाए' का हिन्दी अर्थ है-
(क) कर्मों की प्रधानता से (ख) कर्मों के आने से
(ग) कर्मों के बदलने से (घ) कर्मों के क्षय हो जाने से (घ)

(c) कषाय की मंदता, प्रकृति भद्रता, विनीतता, सदयता और अमत्सरता आदि गुणों के कारण विशेष शुद्धि हो जाने से किस आयु का बंध होता है-
(क) देवायु (ख) नरकायु
(ग) तिर्यंचायु (घ) मनुष्यायु (घ)

(d) मनुष्य जन्म को पाकर जो व्यक्ति धर्मश्रवण करता है, वह क्या प्राप्त कर लेता है-
(क) सम्यग्ज्ञान (ख) सम्यग्दर्शन
(ग) सम्यग्चारित्र (घ) उपर्युक्त सभी (क)

(e) भारण्डपक्षी-दो प्राणी संयुक्त होते हैं जो जन्म से ही एक दूसरे से जुड़े होते हैं। उनके एक पेट और..... पैर होते हैं। रिक्त स्थान के लिए उचित पद है-
(क) दो (ख) चार
(ग) तीन (घ) एक (ग)

(f) शिक्षित और कवचधारी घोड़ा किसका निरोध करने से युद्ध में विजयी होकर उसके त्रास से मुक्त हो जाता है-
(क) परच्छन्दता (ख) स्वच्छन्दता
(ग) पराक्रमता (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(g) तत्त्वार्थ सूत्र का पूरा नाम है-
(क) तत्त्वार्थागम सूत्र (ख) तत्त्वार्थज्ञानागम सूत्र
(ग) तत्त्वार्थाधिगम सूत्र (घ) तत्त्वार्थ बोध सूत्र (ग)

(h) प्रमाण किसे कहते हैं-
(क) सम्यग्ज्ञान (ख) सम्यग्दर्शन
(ग) सम्यग्चारित्र (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(i) सम्यक्त्व को प्राप्त करने वाले जीव वर्तमान में है-
(क) असीमित (ख) सीमित
(ग) असंख्यात (घ) अनन्त (ख)

(j) दूसरे गुणस्थान की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) एक समय (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) दो आवलिका (घ) छह आवलिका (घ)

(k) बारहवें गुणस्थान में कितने कर्मों का उदय होता है-
(क) आठ (ख) सात
(ग) छह (घ) चार (ख)

(l) आर्तध्यान और धर्मध्यान कौनसे गुणस्थान में पाया जाता है-
(क) छठे (ख) तीसरे
(ग) सातवें (घ) चौथे (क)

(m) कौनसे सूत्र में भगवान महावीर ने अनेकान्त दृष्टि से विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देकर व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया-
(क) ज्ञाताधर्मकथा (ख) प्रश्नव्याकरण
(ग) भगवती (घ) अन्तगडदसा (ग)

(n) रागद्वेष रहित पवित्र भावना से प्रत्याख्यान का पालन करना कहलाता है-
(क)विनय विशुद्धि (ख) ज्ञान विशुद्धि
(ग) भाव विशुद्धि (घ) श्रद्धान विशुद्धि (ग)

(o) सेवा आदि विशेष कार्य के लिए गुरु आदि बड़ों की आज्ञा होने पर पच्चक्खाण पार लेना कहलाता है-
(क) महत्तरागारेणं (ख) सागारियागारेणं
(ग) साहुवयणेणं (घ) अब्भुट्ठाणेणं (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) एक व्यक्ति अगर अपने स्त्री-पुत्रादि एवं स्वजनों के लिए पापकर्म करता है तो उसका फल उन सबको भोगना पड़ता है। (नहीं)

(b) पापकर्म से उपार्जित धन त्राणदायक नहीं होता है। (हाँ)

(c) देव अपना आयुष्य क्षय होने पर च्युत होते हैं और मनुष्ययोनि पाते हैं, वहाँ वे आठ अंगों से युक्त होते हैं। (नहीं)

(d) बाल के अग्रभाग जितना भी कोई प्रदेश ऐसा नहीं है,जहाँ जीव ने जन्म-मरण न किया हो। (हाँ)

(e) बाल तप आदि के कारण जीव असुर सम्बन्धी निकाय में जाता है। (हाँ)

(f) जो शुद्धि प्राप्त है, उसी में क्षमा आदि आठ धर्म अविचल रूप से रहते हैं। (नहीं)

(g) 'श्रुतज्ञान' स्व-पर दोनों के लिए उपकारी है। (हाँ)

(h) ज्ञान-अज्ञान का निर्णायक 'दर्शन (दृष्टि)' को माना गया है। (हाँ)

(i) जो विचार शब्द प्रधान होकर अनेक शाब्दिक धर्मों की ओर झुककर तदनुसार अर्थ भेद की कल्पना करता है, वह ऋजुसूत्र नय कहलाता है। (नहीं)

(j) दूसरे गुणस्थान में छह आत्माएँ पायी जाती हैं। (नहीं)

(k) तीसरे गुणस्थान में तेरह योग पाये जाते हैं। (नहीं)

(l) मोक्ष प्राप्त करने वाला जीव उस भव में कम से कम 8 गुणस्थान अवश्य प्राप्त करता है। (हाँ)

(m) लोक सान्त है या अनन्त ?यह प्रश्न जमालि ने पूछा। (नहीं)

(n) स्याद् अवक्तव्य का अर्थ- है भी, नहीं भी पर युगपत कहा नहीं जा सकता। (हाँ)

(o) दयाव्रत कम से कम छह प्रहर का होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	दस अंग	(क) अप्रमादी	नीरोग
(b)	काल के क्षण	(ख) प्रतिबुद्ध	अत्यन्त भयानक
(c)	जो नींद में न हो	(ग) अत्यन्त भयानक	प्रतिबुद्ध
(d)	भारंड पक्षी	(घ) नीरोग	अप्रमादी
(e)	निवृत्ति और उपकरण	(च) भावेन्द्रिय	द्रव्येन्द्रिय
(f)	लब्धि और उपयोग	(छ) द्रव्येन्द्रिय	भावेन्द्रिय
(g)	दूसरे गुणस्थान की जघन्य स्थिति	(ज) दो	एक समय
(h)	चौथे गुणस्थान की जघन्य स्थिति	(झ) आठ	अन्तर्मुहूर्त
(i)	ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से परीषह	(य) एक समय	दो
(j)	मोहनीय कर्म के उदय से परीषह	(र) अन्तर्मुहूर्त	आठ

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मुझे सुदृढ़ स्वस्थ रखने के लिए मस्तक, छाती, पेट, भुजा और जंघा आदि द्रव्य-अंगों की आवश्यकता होती है।	शरीर
(b)	मैं वह शब्द हूँ, जो नीचे के (भवनपति आदि) देवों के उत्पत्तिस्थान के लिए प्रयुक्त होता है।	आसुर
(c)	मुझे पा लेने पर भी विशुद्ध धर्म का श्रवण करना अत्यन्त दुर्लभ है।	औदारिक शरीर
(d)	मेरा योग प्राप्त होने पर भी श्रद्धा का होना परम दुर्लभ है।	धर्म श्रवण
(e)	मैं पर्वतीय गुफा में बुझेदीप वाले पुरुष की तरह सन्मार्ग को देखकर भी ज्ञानदीप के बुझ जाने से दुःखी हो जाता हूँ।	धनाशक्त प्राणी
(f)	धर्म में स्थिर हो जाने पर मुझसे सींची हुई अग्नि के समान परम निर्वाण को प्राप्त होता है।	घी
(g)	मैं मोड़वाली अथवा विग्रह वाली गति हूँ।	वक्रगति/विग्रहगति
(h)	मैं जीव के क्रिया करने का साधन हूँ।	शरीर
(i)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य ये दो दण्डक पाए जाते हैं।	पाँचवाँ
(j)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें 10 योग पाये जाते हैं।	तीसरा
(k)	पाँचवें से लेकर बारहवें तक आठ गुणस्थान मेरे निमित्त से होते हैं।	चारित्र मोहनीय
(l)	खण्ड सत्य से अखण्ड सत्य के साक्षात्कार की प्रक्रिया मेरे दर्शन से ही संभव है।	अनेकान्तवाद
(m)	निरपेक्ष सत्य का कथन अनेकान्त दृष्टिकोण से मेरे माध्यम से ही संभव है।	स्यादवाद
(n)	मैं एक ऐसा प्रत्याख्यान हूँ जिसे साधक मृत्यु निकट अनुभव कर मरणासन्न स्थिति में करता है।	संलेखना संथारा
(o)	मैं एक ऐसा आगम हूँ, जिसमें पूर्वकृत दोषों की निंदा एवं गर्हा करके भविष्य में पाप न करने का संकल्प करना प्रत्याख्यान बतलाया है।	सूत्रकृतांग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) निह्नव कौन होते हैं ? ये मुख्य कितने हैं ? कोई एक निह्नव का नाम तथा उसके द्वारा प्रवर्तित वाद लिखिए।

जिनशासन में कई विपरीत मति मिथ्यादृष्टि निह्नव हो गये हैं। उनमें से मुख्य 9 नाम तथा उनके द्वारा प्रवर्तित वाद इस प्रकार हैं-1. जमालि-क्रियमाण अकृतवाद, 2. तिष्यगुप्त-जीवप्रदेश-अजीववाद 3. आषाढाचार्य के अव्यक्तवादी शिष्य, 4. अश्वमित्र, 5. गंगाचार्य, 6. षडूलूक, 7. स्थविर, 8. गोष्ठामहिल और 9. बोटिक शिवभूति।

1. क्रियमाण-अकृतवाद, 2.जीवप्रदेश-अजीववाद, 3.अव्यक्तवाद, 4. समुच्छेदवाद, 5. द्वैक्रियवाद, 6. षट्पदार्थप्ररूपणवाद, 7. त्रैराशिकवाद, 8. स्थिरीकरणवाद और 9. अबद्धपोतवाद ।

अथवा

1. जिनशासन में कई विपरित मति मिथ्यादृष्टि निह्नव हो गए है। 2. ये मुख्य 9 है।
3. 9 निह्नव और उनके द्वारा प्रवर्तित वादः- (1) जमालि-क्रियमाण-अकृतवाद। (2) तिष्यगुप्त-जीवप्रदेश-अजीववाद। (3) आषाढ़ाचार्य के अक्यक्तवादी शिष्य' अथ्यक्त्ववाद। (4) अश्वमित्र-समुच्छेदवाद। (5) गंगाचार्य-द्वैक्रियवाद। (6) षडूलूक- षट्पदार्थप्ररूपणवाद। (7) स्थविर-त्रैराशिकवाद। (8) गोष्ठामहिल- स्थिरीकरणवाद। (9) बोटिक शिवभूति- अबद्धपोतवाद।
इन में से कोई भी एक जोड़ा मान्य होगा।

(b) जीव किसमें आसक्त होकर अपने आत्म-स्वरूप को विस्मृत कर देता है ?
आत्म-विस्मृति, शरीर, इन्द्रियाँ, धन परिवार आदि साधनों में आसक्त होकर।

(c) प्रतिबुद्ध कितने प्रकार का होता है ?
1. जे नींद में न हो 2. जो धर्माचरण के लिए जागृत हो।

(d) 'परं परं सूक्ष्मम्' इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
इन पाँचों प्रकारों में पर-पर अर्थात् आगे-आगे का शरीर पूर्व-पूर्व से सूक्ष्म है।

(e) अपवर्तनीय आयु किसे कहते हैं ?
जो आयु बंधी हुई स्थिति के पूर्ण होने से पहले ही भोगी जा सके।

(f) पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक कितने-कितने कर्मों की उदीरणा होती है ?
पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक सात-आठ-छह कर्मों की उदीरणा होती है।

(g) अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान किसे कहते हैं ?
सात प्रकृतियों का क्षयोपशम आदि करने पर जीव की जो अवस्था होती है, उसे चौथा अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान कहते हैं।

(h) 'जीव शाश्वत है या अशाश्वत' इस प्रश्न का भगवान महावीर ने क्या उत्तर दिया?
द्रव्यार्थिक दृष्टि से जीव शाश्वत है और पर्यायार्थिक दृष्टि से जीव अशाश्वत है।

(i) दिवसचरिम पच्चक्खाण से सम्बन्धित जानकारी लिखिए।
इसमें दिन अस्त होने से पूर्व पच्चक्खाण किया जाता है। इसमें शेष रहे दिन तथा पूरी रात का त्याग होता है। यह पच्चक्खाण तिविहार अथवा चौविहार दोनों प्रकार से किया जाता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी, न वीससे पंडिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंडपक्खीव चरेऽप्पमत्तो।। गाथा का अर्थ लिखिए।
आशुप्रज्ञ (उचित कार्य में शीघ्र प्रवृत्त होने की बुद्धि वाला), पण्डित (ज्ञानी साधक) मोहनिद्रा में सोये हुए लोगों में रहकर भी सब तरह से जागृत होकर जीए। प्रमाद में क्षणभर भी विश्वास न करे।

(b) खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी, अप्पाणुरक्खी चरेऽप्पमत्तो। गाथा का भावार्थ लिखिए।
कोई भी व्यक्ति आत्म-विवेक झटपट प्राप्त नहीं कर सकता, इसलिए अभी से ही कामभोगों का परित्याग करके मोक्षमार्ग के लिए समुद्यत होकर लोक (प्राणीजगत) का समत्व भाव से सम्यक् रूप से विचार करो। हे आत्मगुण रक्षक महर्षि या मोक्ष के इच्छुक साधक! समतापूर्वक अप्रमत्त रूप से विचरण करते रहो।

(c) 'जं किंचि पासं' की तीन व्याख्याएँ लिखिए।
1. जो कुछ भी थोड़ा सा भी प्रमाद या दोष (दुश्चिन्तित, दुर्भाषित, दुश्चेष्टित के रूप में प्रमाद) है, वह पाश रूप बन्धनकारक समझता हुआ।
2. संसार में जो भी धन, जन आदि पदार्थ हैं।
3. गृहस्थों से परिचय आदि हैं, उन्हें पाशरूप मानता हुआ चले।

(d) 'श्रुतं मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम्'' इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
श्रुतज्ञान मतिज्ञान पूर्वक होता है। अर्थात् पहले मतिज्ञान होता है, उसके बाद श्रुत ज्ञान होता है। वह श्रुतज्ञान दो, अनेक तथा बारह भेद वाला होता है।

(e) कौनसा क्षायिक भाव किस कर्म के क्षय से प्रकट होता है ?
ज्ञानावरणीय के क्षय से क्षायिक अर्थात् अनन्त ज्ञान, दर्शनावरणीय के क्षय से अनन्त दर्शन,अन्तराय

कर्म के क्षय से अनन्त दान, अनन्त लाभ, अनन्त भोग, अनन्त उपभोग, अनन्त वीर्य तथा मोहनीय कर्म के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक चारित्र प्रकट होते हैं।

(f) गुणस्थान स्वरूप में समकित द्वार को समझाइए।

क्षायिक सम्यक्त्व चौथे गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। उपशम सम्यक्त्व चौथे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक होता है। क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व चौथे से सातवें गुणस्थान तक होता है। सास्वादन सम्यक्त्व दूसरे गुणस्थान में होता है। मिथ्यात्व और मिश्र गुणस्थान में सम्यक्त्व नहीं है।

(g) अनेकान्त दर्शन को समझाइए।

किसी वस्तु या पदार्थ को अनेक दृष्टियों से अनेक सन्दर्भों से, अनेक अवस्थाओं से देख-समझ कर उसमें निहित अनेक विशेषताओं को हृदयंगम करना अनेकान्त दर्शन है। एक समय में एक गुणधर्म को मुख्यता देते हुए उसमें निहित अन्य गुणधमों का निषेध नहीं करना अनेकान्त दर्शन की मौलिक विशेषता है।

(h) पच्छन्नकालेणं आगार को समझाइए।

पौरसी आदि का समय ज्ञात न होने से अथवा बादलों, आँधी, कुहरा आदि के कारण सूर्य नहीं दिखाई दे, अथवा नेत्र विकार आदि के कारण सूर्य या घड़ी आदि स्पष्ट दिखाई न दें, जिससे पौरसी पूर्ण होने के भ्रम से पार लेना।

(i) 'ण पउस्से' शब्द की व्याख्या लिखिए।

अमनोज्ञ एवं अरूचिकर शब्द, रूप, रस, गन्ध एवं स्पर्श (कर्कश, कठोर आदि) प्राप्त होने पर-हाय! मर गए! कब तक ये परेशान करते रहेंगे ? इस प्रकार का प्रद्वेषयुक्त विचार न करें; न ही इस प्रकार कहे और न ही परिहार करे।